जे॰डी॰ वीमेन्स कॉलेज, पटना के 46वें स्थापना दिवस के सुअवसर पर बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–22.12.2016, समय–पूर्वा॰ 11:30 बजे, स्थान–जे॰डी॰ वीमेन्स कॉलेज, पटना)

जे॰डी॰ वीमेन्स कॉलेज, पटना के 46वें स्थापना दिवस के सुअवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित शिक्षा मंत्री श्री अशोक चौधरी जी, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के कुलपति प्रो॰ (डॉ॰) मो॰ इश्तियाक जी, प्रबंध निदेशक, बिहार राज्य शैक्षणिक आधारभूत संरचना विकास निगम लिमिटेड श्री संजीवन सिन्हा जी, जे॰ डी॰ वीमेन्स कॉलेज, पटना के प्रधानाचार्य प्रो॰ (डॉ॰) सुभाष प्रसाद सिन्हा जी, महाविद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाएँ, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, छात्राएँ, अभिभावकगण, मीडिया– प्रतिनिधिगण, देवियों, सज्जनों!!

जे॰डी॰ वीमेन्स कॉलेज, पटना के '46वें स्थापना दिवस' के शुभ अवसर पर उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आज के दिन नवनिर्मित कलाभवन का उद्‌घाटन इस महाविद्यालय के निरंतर विकास की दिशा में एक बढ़ता हुआ कदम है।

मगध विश्वविद्यालय के पटना अवस्थित अंगीभूत महाविद्यालयों में जे॰ डी॰ वीमेन्स कॉलेज का महत्वपूर्ण स्थान है। विशेषतः स्त्री–शिक्षा के विकास में यह अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। देश की प्रगति में आधी आबादी वाली नारियों की सहभागिता आवश्यक है। वर्त्तमान समय में महिलाओं के विकास एवं उनके अधिकारों के संरक्षण का सबसे सबल माध्यम शिक्षा है। शिक्षित एवं जागरूक महिला ही अपने अधिकारों की सुरक्षा करने में सक्षम होगी। भारतवर्ष में भी स्त्रियों में शिक्षा के प्रति अब झुकाव दृष्टिगोचर होने लगा है। यह शिक्षा का ही प्रभाव है कि आज स्त्रियों के आत्म–विश्वास में वृद्धि हुई है एवं जीवन के हर क्षेत्र में वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर रही हैं। बिहार के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में, अधिकतर विश्वविद्यालयों के

'दीक्षांत–समारोहों' में सम्मिलित होने का मुझे मौका मिला है। मैंने देखा है कि डिग्री प्राप्तकर्त्ता टॉप–टेन विद्यार्थियों में छात्राओं की संख्या प्रायः आधे से अधिक रही है। किसी–किसी जगह तो दो तिहाई तक छात्राएँ टॉप–टेन में रहती हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की दृष्टि में ''एक स्त्री को शिक्षित करना पूरे परिवार को शिक्षित करने के बराबर है।'' नारी–सशक्तीकरण का मुद्दा एक ऐसा मुद्दा है, जो समय की माँग है, और हमारी भारतीय संस्कृति की परम्पराओं के अनुरूप भी है। नारियों का आर्थिक सशक्तीकरण हो, इसके लिए आवश्यक है कि ज्ञान–विज्ञान के हर क्षेत्र में उनकी पैठ हो, सेवा के हर क्षेत्र में उनकी नियुक्तियाँ हों। वस्तुतः नारी–सशक्तीकरण के प्रयासों को गति प्रदान करना पुरूष–वर्ग का परम दायित्व है, ताकि समाज का संतुलित विकास हो। भारतीय संविधान के प्रमुख रचयिता डॉ॰ बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने भी इस दिशा में हमारा मार्ग दर्शन करते हुए कहा है कि–''मैं किसी समुदाय की प्रगति को, महिलाओं ने जो प्रगति की है, उससे मापता हूँ।''

गाँधीजी ने जिस रोजगारोन्मुखी शिक्षा की बातें कही थीं, आधुनिक शिक्षा तेजी से उसी दिशा में आगे बढ़ रही है। हम गाँधीवादी अवधारणा को ही व्यावहारिक रूप दे रहे हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि हम छात्राओं को ऐसी शिक्षा दें, जो उन्हें आर्थिक स्वतन्त्रता प्रदान करे, क्योंकि तभी उनका जीवन–स्तर बेहतर हो सकेगा। स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा था–''स्त्रियों की दशा में सुधार लाये बिना विश्व का कल्याण संभव नहीं है। एक पंख से चिड़िया उड़ान नहीं भर सकती।''

प्यारी बेटियों! आप जो ज्ञानार्जन कर रही हो, उसमें एकाग्रता की बहुत जरूरत है। मैं, तुमलोगों को महान् वैज्ञानिक आइन्स्टीन के जीवन का एक प्रसंग सुनाना चाहता हूँ। आइन्स्टीन एक बार अपने देश में

रेल–यात्रा कर रहे थे। यात्रा के दौरान टिकट–चेकर ने जब उनके पास आकर टिकट माँगा, तो वे अपने कोट, पैंट, शर्ट के पॉकेट ढूंढने लगे। बहुत प्रयास के बाद भी जब टिकट नही मिला, तो वे अत्यन्त चिन्तित होने लगे। उनकी बेचैनी एक दूसरे पैसेन्जर ने देखी, जो उन्हें पहचानता भी था। उसने टिकट–चेकर से कहा–''टिकट निरीक्षक बाबू, आप इन्हें नही पहचानते? ये अपने देश के महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन महोदय हैं''। टिकट–चेकर बड़ा शर्मिन्दा हुआ और उसने आइन्सटीन से कहा–''महोदय, मुझसे गलती हो गई। मेरा गलती है कि मैं आपको नही पहचान सका। आप कभी भी रेल–यात्रा संबंधी नियमों का उल्लंघन नही करेंगे।'' आइन्सटीन ने कहा–''अरे भाई! गलती तो मेरी है कि मैं टिकट अपनी जेब में ठीक से सँभालकर नही रख पाया हूँ। लेकिन जानते हो, मेरी परेशानी आपको टिकट नहीं दिखाने से ही हल नहीं होने वाली। मेरी परेशानी है कि मुझे किस स्टेशन पर उतरना है, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि टिकट पर मेरे गंतव्य स्टेशन का नाम वर्णित है।'' प्यारी बच्चियों, आइंस्टीन के जीवन का यह प्रसंग हमें यह बताता है कि छोटे या बड़े किसी भी लक्ष्य के प्रति हममें कितनी तल्लीनता और एकाग्रता आवश्यक है। आइन्स्टीन ट्रेन में बैठे हुए भी अपनी वैज्ञानिक सोच और महान लक्ष्य को प्राप्त करने में इतने निमग्न थे कि अपना छोटा–सा लक्ष्य अर्थात् किस स्टेशन पर उतरना है, वह भी याद नहीं रख सके। मेरा अनुरोध होगा कि आपलोग बड़े लक्ष्य हासिल करने के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए भी, अपने छोटे–छोटे लक्ष्यों व छोटी–छोटी व्यावहारिक बातों का भी पूरा ख्याल रखें। मेरा सुझाव होगा कि आप सब पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ–साथ, महापुरूषों की जीवनियाँ, भारतीय इतिहास की विरासतों और भारतीय संस्कृति से जुड़ी बातों का भी गहन अध्ययन करते रहें। आप कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि–जिस किसी भी संकाय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहती हैं, उसका विशेष अध्ययन करते रहें। परन्तु भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों एवं विश्व के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों पर भी

अपनी खुली नजर जरूर रखें, ताकि आपका सर्वांगीण विकास होता रहे। आधुनिक युग ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी विकास का युग है। 'सूचना क्रांति' और 'तकनीकी विकास' के आज के युग में आप वैज्ञानिक विकासपरक गतिविधियों से पृथक् रहकर, समुचित रूप से लाभान्वित नहीं हो सकतीं। किन्तु, साथ ही मेरा अनुरोध आपसे यह भी होगा कि आप वैज्ञानिक और भौतिक विकास के इस दौर में भी अपने राष्ट्र की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ज्ञान–सम्पदा का भी पूरा ख्याल रखें। हम इसी सम्पदा के बल पर विश्व–गुरू थे और आगे भी हमारा यही वैभव पूरी दुनियाँ का हमें सिरमौर बनाएगा।

किसी संस्था का विकास एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। इसकी गति कभी अवरूद्ध नहीं होनी चाहिए, तभी इसकी सार्थकता है। यह संतोष का विषय है कि जे॰ डी॰ वीमेन्स कॉलेज निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यह 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' की नैक टीम द्वारा मूल्यांकित और ग्रेड 'बी' प्राप्त कॉलेज है। 'नैक' द्वारा और अच्छा ग्रेडेशन प्रदान किया जाये, इसके लिए आगे भी प्रयासरत रहना चाहिए।

मुझे बताया गया है कि इस महाविद्यालय में कला–संस्कृति एवं विज्ञान संबंधी अनेक कार्यक्रम प्रायः आयोजित होते हैं। यह अत्यन्त सराहनीय है। शिक्षा के साथ–साथ, व्यक्तित्व–विकास के लिए ऐसे आयोजनों का काफी महत्व है। अकादमिक उपलब्धियों के अतिरिक्त छात्राओं को स्वास्थ्य, सफाई एवं समाज–कल्याण के प्रति भी जागरूक किया जाना जरूरी है।

मुझे ज्ञात हुआ है कि आपका यह महाविद्यालय अथक प्रयास, लगन और निरंतर संघर्ष का प्रतीक है। एक छोटे से कमरे से यात्रा प्रारंभ कर, आपने इस भव्य भवन तक की मंजिल तय की है। इस भव्य भवन की सार्थकता छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण पर निर्भर करती है।

इस बात से मैं अवगत हूँ कि बिहार के विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की संख्या आवश्यकता के अनुरूप नहीं हैं, जिस कारण पठन–पाठन में असुविधा हो रही है। राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालयों को शिक्षक–छात्र अनुपात की स्थिति में सुधार लाने के लिए गंभीरता से प्रयास करने की आवश्यकता है। महाविद्यालयों में विद्यार्थियों के अनुपात में योग्य शिक्षकों की समुचित संख्या होगी, तभी गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक वातावरण का निर्माण हो सकेगा।

मुझे आशा है कि हम सभी नये वर्ष में उच्च शिक्षा की तमाम चुनौतियों का मिलजुल कर सामना करेंगे। उच्च शिक्षा के विकास की दिशा में राज्य में तेजी से प्रयास हो रहे हैं। हमें उम्मीद है कि हम जल्दी ही मौजूदा समस्याओं से उबरने में सफल सिद्ध होंगे।

आज आपके ‘स्थापना–दिवस’ पर नवनिर्मित कलाभवन का उद्घाटन हुआ है। आज का दिन उपलब्धियों के मूल्यांकन के साथ–साथ, भविष्य के सपनों को साकार करने हेतु संकल्पित होने का भी सुअवसर है। मुझे उम्मीद है कि जे॰डी॰ वीमेन्स कॉलेज भी अपनी आधारभूत सुविधाओं को तेजी से विकसित करते हुए, राज्य में उच्च शिक्षा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

नया वर्ष शीघ्र ही दस्तक देने वाला है। नव वर्ष हम सबके लिए सुखद, कल्याणकारी और समृद्धिदायक हो, मेरी यह मंगलकामना है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।